<u>श्रीभीष्मस्तुतिः</u>

<u>*Śrī Bhīṣma Stutiḥ*</u>

श्रीभीष्म उवाच

इति मतिरुपकल्पिता वितृष्णा

भगवति सात्वतपुङ्गवे विभूम्नि ।

स्वसुखमुपगते क्वचिद्विहर्तुं

प्रकृतिमुपेयुषि यद्भवप्रवाहः ॥ ३२ ॥

śrībhīṣma uvāca

iti matirupakalpitā vitṛṣṇā

bhagavati sātvatapuṅgave vibhūmni |

svasukhamupagate kvacidvahartuṁ

prakṛtimupeyuṣi yadbhavapravāhaḥ ||32||

Now, at the time of death, this mind, which is rendered pure by many and varied spiritual practices, is free from craving. I completely offer my mind at the feet of the One who appears as the noble of the Yadu clan, but who is in reality the all-pervading being, Śrī Kṛṣṇa, the One who is always full and happy in Himself, who accepts the *yoga māyā* just for play, and from whom these cycles of creation keep appearing. (32)

भीष्मजीने कहा—अब मृत्युके समय मैं अपनी यह बुद्धि, जो अनेक प्रकारके साधनोंका अनुष्ठान करनेमें अत्यन्त शुद्ध एवं कामनारहित हो गयी है, यदुवंश-शिरोमणि अनन्त भगवान् श्रीकृष्णके चरणोंमें समर्पित करता हूँ, जो सदा-सर्वदा अपने आनन्दमय स्वरूपमें स्थित रहते हुए ही कभी विहार करनेकी—लीला करनेकी इच्छासे प्रकृतिको स्वीकार कर लेते हैं, जिससे यह सृष्टि-परम्परा चलती है ॥ ३२ ॥

इति	अब (मैं)	**क्वचित्**	(जो) कभी
वितृष्णाः	कामनाहीन	**विहर्तुं**	विहार (लीला)
उपकल्पिताः	बनायी गयी		करनेके लिए
मतिः	(अपनी) बुद्धिको	**प्रकृतिं**	प्रकृतिको
सात्वतपुंगवे	यदुवंशशिरोमणि	**उपेयुषि**	स्वीकार करते हैं
विभूम्नि	सर्वव्यापक	**यत्**	जिससे
स्वसुखं	अपने आनन्दमें	**भव**	संसारका
उपगते	स्थित	**प्रवाहः**	प्रवाह चलता
भगवति	भगवानमें (लगाताहूँ)		है ॥३२॥

त्रिभुवनकमनं तमालवर्णं
रविकरगौरवराम्बरं दधाने।
वपुरलककुलावृताननाब्जं
विजयसखे रतिरस्तु मेऽनवद्या॥ ३३॥

tribhuvanakamanaṁ tamālavarṇaṁ
ravikaragauravarāmbaraṁ dadhāne।
vapuralakakulāvṛtānanābjaṁ
vijayasakhe ratirastu me'navadyā ।।33।।

The One who has an enchanting body resembling the dark bluish tint of the bark of the *tamāla* tree, who wears a fluttering robe like the rays of the morning sun, whose lotus face is surrounded by flowing, curly locks of hair. Toward Śrī Kṛṣṇa, the friend of Arjuna, may I have unfailing love free of worldly desires. (33)

जिनका शरीर त्रिभुवनसुन्दर एवं श्याम तमालके समान साँवला है, जिसपर सूर्यरश्मियोंके समान श्रेष्ठ पीताम्बर लहराता रहता है और कमल-सदृश मुखपर घुँघराली अलकें लटकती रहती हैं. उन अर्जुन-सखा श्रीकृष्णमें मेरी निष्कपट प्रीति हो ॥ ३३ ॥

त्रिभुवन	त्रिलोकीमें	रविकर	सूर्यकी किरणोंके
कमनं	सुन्दर,		समान
तमालवर्णं	तमाल वृक्षके समान वर्णवाला	गौर	उज्ज्वल,
		वर	श्रेष्ठ
वपुः	शरीर,	अम्बरं	पीताम्बर
दधाने	पहिने हुए,	सखे	सखामें
अलककुल	अलकोंके समूहसे	मे	मेरी
आवृतः	घिरे	अनवद्या	निष्पाप (निष्काम)
आननाब्जं	कमल मुखवाले,	रतिः	प्रीति
विजय	अर्जुनके	अस्तु	हो ॥३३॥

युधि तुरगरजोविधूम्रविष्वक-
कचलुलितश्रमवार्यलंकृतास्ये।
मम निशितशरैर्विभिद्यमानत्वचि
विलसत्कवचेऽस्तु कृष्ण आत्मा॥ ३४॥

yudhi turagarajovidhūmraviṣvak-
kacalulitaśramavāryalaṁkṛtāsye ।
mama niśitaśarairvibhidyamānatvaci
vilasatkavace'stu kṛṣṇa ātmā ।।34।।

My mind recollects that unique glimpse of You in the battlefield: Your flowing, curly hair tainted by the dust raised by the horses' hooves, the little dew drops of sweat caused by Your exertions on the battlefield making Your face more beautiful, your armor and skin pierced by my sharp arrows. Unto that beautiful armored Śrī Kṛṣṇa, may I offer my body, mind, and self. (34)

मुझे
युद्धके समयकी उनकी वह विलक्षण छबि याद आती है। उनके मुखपर लहराते हुए घुँघराले बाल घोड़ोंकी टापकी धूलसे मटमैले हो गये थे और पसीनेकी छोटी-छोटी बूँदें शोभायमान हो रही थीं। मैं अपने तीखे बाणोंसे उनकी त्वचाको बींध रहा था। उन सुन्दर कवचमण्डित भगवान् श्रीकृष्णके प्रति मेरा शरीर, अन्तःकरण और आत्मा समर्पित हो जायँ॥ ३४॥

युधिः	युद्धमें	मम	मेरे
तुरगरजः	घोड़ोंके खुरोंसे उड़ी धूलिसे	निशित शरैः	तीक्ष्ण वाणोंके लगनेसे
विष्वक्	चारों ओरसे	विभिद्यमानः	छिदते हुए
विधूम्र	धूसर हुए	त्वचि	त्वचावाले,
कचः	बालोंसे	कवचे	कवचसे
लुलितः	घिरा हुआ (और)	विलसत्	शोभायमान
श्रमवारि	पसीनेसे	कृष्णः	श्रीकृष्णमें
अलंकृतः	सुशोभित	आत्मा	(मेरा) चित्त
आस्ये	मुखवाले,	अस्तु	लगा रहे ॥३४॥

सपदि सखिवचो निशम्य मध्ये
निजपरयोर्बलयो रथं निवेश्य।
स्थितवति परसैनिकायुरक्ष्णा
हृतवति पार्थसखे रतिर्ममास्तु॥ ३५॥

sapadi sakhivaco niśamya madhye
nijaparayorbalayo ratham niveśya ।
sthitavati parasainikāyurakṣṇā
hṛtavati pārthasakhe ratirmamāstu ।।35।।

Having heard the request of his friend Arjuna, Śrī Kṛṣṇa immediately placed the chariot between the two armies. And stationed there, by a mere glance the Lord robbed the life-span of the Kaurava army. Toward that Śrī Kṛṣṇa, the friend of Arjuna, may I have supreme love. (35)

अपने मित्र अर्जुनकी बात सुनकर, जो तुरंत ही पाण्डव-सेना और कौरव-सेनाके बीचमें अपना रथ ले आये और वहाँ स्थित होकर जिन्होंने अपनी दृष्टिसे ही शत्रुपक्षके सैनिकोंकी आयु छीन ली, उन पार्थसखा भगवान् श्रीकृष्णमें मेरी परम प्रीति हो ॥ ३५ ॥

सखि	सखा (अर्जुन) के	**स्थितवति**	ठहरे हुए
वचः	वचनको	**परं**	शत्रुके
निशम्य	सुनकर	**सैनिक**	सैनिकोंकी
सपदि	झटपट	**आयुः**	आयुको
निज	अपनी (और)	**अक्ष्णा**	अपने नेत्रोंसे
परयोः	शत्रुओंकी	**हृतवति**	हरण करते हुए
बलयोः	सेनाके	**पार्थसखे**	अर्जुनके सखामें
मध्ये	बीचमें	**मम**	मेरी
रथं	रथको	**रतिः**	प्रीति
निवेश्य	प्रवेश कराके (एवं वहाँ)	**अस्तु**	हो ॥३५॥

व्यवहितपृतनामुखं निरीक्ष्य
स्वजनवधाद्विमुखस्य दोषबुद्ध्या।
कुमतिमहरदात्मविद्यया यश्चरणरतिः
परमस्य तस्य मेऽस्तु॥ ३६॥

vyavahitapṛtanāmukhaṁ nirīkṣya
svajanavadhādvimukhasya doṣabuddhyā ।
kumatimaharadātmavidyayā yaścaraṇaratiḥ
paramasya tasya me'stu ।।36।।

When Arjuna, stationed between the two armies, saw us, the heads of the Kaurava army, from a distance, and felt that slaying these people would be the greatest sin, he wanted to withdraw from the battle. At that time, Śrī Kṛṣṇa unfolded self-knowledge in the form of the Gītā and destroyed Arjuna's ignorance. Toward the feet of that Śrī Kṛṣṇa may I have devotion. (36)

अर्जुनने जब दूरसे कौरवोंकी सेनाके मुखिया हमलोगोंको देखा, तब पाप समझकर वह अपने स्वजनोंके वधसे विमुख हो गया । उस समय जिन्होंने गीताके रूपमें आत्मविद्याका उपदेश करके उसके सामयिक अज्ञानका नाश कर दिया, उन परमपुरुष भगवान् श्रीकृष्णके चरणोंमें मेरी प्रीति बनी रहे ॥ ३६ ॥

पृतना	सेनाके	**कुमति**	दुर्बुद्धिको
मुखं	अगले भागमें	**आत्मविद्यया**	अध्यात्म ज्ञानकी शिक्षा द्वारा
व्यवहित	व्यवस्थित खड़े		
स्वजन	सम्बन्धियोंको	**यः**	जिन्होंने
निरीक्ष्य	देखकर	**अहरत्**	हरण कर लिया,
दोषबुध्या	इसमें दोष है ऐसी समझसे	**तस्य**	उन
		परमस्य	परमपुरुषके
वधात्	उनको मारनेसे	**चरणरतिः**	चरणोंमें प्रीति
विमुखस्य	विमुख हुए (अर्जुन) की	**मे**	मेरी
		अस्तु	हो ॥३६॥

स्वनिगममपहाय मत्प्रतिज्ञा-
मृतमधिकर्तुमवप्लुतो रथस्थः।
धृतरथचरणोऽभ्ययाच्चलद्गु-
र्हरिरिव हन्तुमिभं गतोत्तरीयः॥ ३७॥

svanigamamapahāya matpratijñā-
mṛtamadhikartumavapluto rathasthaḥ ।
dhṛtarathacaraṇo'bhyayāccaladgu-
rhaririva hantumibhaṁ gatottarīyaḥ ।।37।।

I had vowed that I would make Śrī Kṛṣṇa take up arms. To make my promise true, you actually abandoned your pledge (to refrain from taking up arms during the war). At that time, your rushing forth from the chariot, like a lion pouncing to kill an elephant, caused a tremor in the Mother Earth, and your upper garment slipped down. (37)

मैंने प्रतिज्ञा कर ली थी कि मैं श्रीकृष्णको शस्त्र ग्रहण कराकर छोड़ूँगा; उसे सत्य एवं ऊँची करनेके लिये उन्होंने अपनी शस्त्र ग्रहण न करनेकी प्रतिज्ञा तोड़ दी। उस समय वे रथसे नीचे कूद पड़े और सिंह जैसे हाथीको मारनेके लिये उसपर टूट पड़ता है, वैसे ही रथका पहिया लेकर मुझपर झपट पड़े। उस समय वे इतने वेगसे दौड़े कि उनके कंधेका दुपट्टा गिर गया और पृथ्वी काँपने लगी॥ ३७॥

स्व	अपनी	इभं	हाथीको
निगमं	प्रतिज्ञाको	हन्तुं	मारनेके लिए
अपहाय	छोड़कर	हरि	सिंहके
मत्	मेरी	इव	समान
प्रतिज्ञां	प्रतिज्ञाको	अभ्यात्	मेरी ओर दौड़े, (जिससे)
ऋतं	सच्ची		
अधिकर्तुं	कर देनेके लिए	गुः	पृथ्वी
रथस्थः	रथपरसे	चलत्	काँपने लगी (और)
अवप्लुतः	नीचे कूदकर,	उत्तरीयः	ऊपरी पटुका
रथचरणः	रथ चक्र	गतः	गिर गया था ॥३७॥
धृत	लिए हुए		

शितविशिखहतो विशीर्णदंशः
क्षतजपरिप्लुत आततायिनो मे।
प्रसभमभिससार मद्वधार्थं
स भवतु मे भगवान् गतिर्मुकुन्दः ॥ ३८॥

śitaviśikhahato viśīrṇadaṁśaḥ
kṣatajaparipluta ātatāyino me ।
prasabhamabhisasāra madvadhārthaṁ sa bhavatu
me bhagavān gatirmukundaḥ ।।38।।

Even after being held back by Arjuna, the One who rushed towards me vigorously to kill me, the Lord who in spite of this act has all grace and affection for me, let that Lord be my only refuge. (38)

मुझ आततायीने तीखे बाण मार-मारकर उनके शरीरका कवच तोड़ डाला था, जिससे सारा शरीर लहूलुहान हो रहा था, अर्जुनके रोकनेपर भी वे बलपूर्वक मुझे मारनेके लिये मेरी ओर दौड़े आ रहे थे। वे ही भगवान् श्रीकृष्ण, जो ऐसा करते हुए भी मेरे प्रति अनुग्रह और भक्तवत्सलतासे परिपूर्ण थे, मेरी एकमात्र गति हों—आश्रय हों ॥ ३८ ॥

शित	तीक्ष्ण	विशीर्ण	कट गया था,
विशिख	बाणोंसे	क्षतज	(वे) घावोंसे
हतः	मारे जानेके कारण	परिप्लुतः	भरे हुए
दंशः	(जिनका) कवच	मे	मुझ
आततायिनः	आततायीकी ओर	भगवान्	भगवान
मत्	मेरे	मुकुन्दः	मुकुन्द
वधार्थं	वधके लिए	मे	मेरी
प्रसभं	वेगपूर्वक	गतिः	गति
अभिससार	दौड़ते चले,	भवतु	होवें ॥३८॥
स	वे		

विजयरथकुटुम्ब आत्ततोत्रे
धृतहयरश्मिनि तच्छ्रियेक्षणीये ।
भगवति रतिरस्तु मे मुमूर्षोर्यमिह
निरीक्ष्य हता गताः सरूपम्॥ ३९॥

vijayarathakuṭumba āttatotre
dhṛtahayaraśmini tacchriyekṣaṇīye ।
bhagavati ratirastu me mumūrṣoryamiha
nirīkṣya hatā gatāḥ sarūpam ।।39।।

The One who was always vigilantly protecting Arjuna's chariot, Śrī Kṛṣṇa, holding the reins of the horses in his left hand and the whip in his right hand. This became a very unique and beautiful vision of the Lord. In the Mahābhārata war, the warriors who died in battle also had a glimpse of this beautiful sight, and because of this they attained the abode of the Lord. For that Lord, the friend of Arjuna, may I whose death is imminent have total love and devotion. (39)

अर्जुनके रथकी रक्षामें सावधान जिन श्रीकृष्णके बायें हाथमें घोड़ोंकी रास थी और दाहिने हाथमें चाबुक, इन दोनोंकी शोभासे उस समय जिनकी अपूर्व छबि बन गयी थी, तथा महाभारत युद्ध-में मरनेवाले वीर जिनकी इस छबिका दर्शन करते रहनेके कारण सारूप्य मोक्षको प्राप्त हो गये, उन्हीं पार्थसारथि भगवान् श्रीकृष्णमें मुझ मरणासन्नकी परम प्रीति हो॥ ३९'॥

विजय	अर्जुनके	यं	जिसे
रथ	रथके	श्रिये	शोभाको
कुटुम्ब	परिकर (सारथी) बने,	निरीक्ष्य	देखकर
		हताः	मारे गये लोग
तोत्रे	चाबुक	सरूपं	सारूप्य मोक्षको
आत्त	पकड़े,	गताः	प्राप्त हुए
हयरश्मिनि	घोड़ोंकी लगाम	भगवति	(उन) भगवानमें
धृत	लिए हुए,	मे	मुझ
इह	यहाँ युद्ध भूमिमें	मुमूर्षोः	मरनेवालेकी
तत्	उस	रतिः	प्रीति
ईक्षणीये	देखने ही योग्य	अस्तु	हो ॥३९॥

ललितगतिविलासवल्गुहास-
प्रणयनिरीक्षणकल्पितोरुमानाः ।
कृतमनुकृतवत्य उन्मदान्धाः
प्रकृतिमगन् किल यस्य गोपवध्वः ॥४०॥

lalitagativilāsavalguhāsa-
praṇayanirīkṣaṇakalpitorumānāḥ ।
kṛtamanukṛtavatya unmadāndhāḥ
prakṛtimagan kila yasya gopavadhvaḥ ।।40।।

During the *rāsa līlā*, the Lord gave the greatest honor to the gopikās with his graceful walk and gestures, sweet smile, and eyes filled with love. When he disappeared during the dance, the gopikās, being blinded by intoxicating love and the pain of separation, began toimitate his *līlā* (play). Having discovered oneness in love with Śrī Kṛṣṇa, may I have love for that same Lord.(40)

जिनकी लटकीली सुन्दर चाल हाव-भावयुक्त चेष्टाएँ, मधुर मुसकान और प्रेमभरी चितवनसे अत्यन्त सम्मानित गोपियाँ रासलीलामें उनके अन्तर्धान हो जानेपर प्रेमोन्मादसे मतवाली होकर जिनकी लीलाओंका अनुकरण करके तन्मय हो गयी थीं, उन्हीं भगवान् श्रीकृष्णमें मेरा परम प्रेम हो ॥ ४० ॥

ललित	सुन्दर	कृतं	श्रीकृष्ण लीलाओंका
गति	चाल,	अनुकृतवत्य	अनुकरणकारिणी
विलास	विलास,	उन्मदान्धाः	प्रेमोन्मत्ता
वल्गु	मनोहर	गोपवध्वः	गोप वधुगण
हास	हँसी,	किल	अहो
प्रणय	युक्त	यस्य	जिन श्रीकृष्णके
निरीक्षण	दृष्टिसे,	प्रकृतिं	स्वभावको
उरु	बहुत	अगन्	प्राप्त हो (तन्मय हो)
मानाः	सम्मान		गयीं ॥४०॥
कल्पितः	प्राप्ता,		

मुनिगणनृपवर्यसंकुलेऽन्तःसदसि *munigaṇanṛpavaryasaṁkule'ntaḥsadasi*

युधिष्ठिरराजसूय एषाम् । *yudhiṣṭhirarājasūya eṣām ।*

अर्हणमुपपेद ईक्षणीयो *arhaṇamupapeda īkṣaṇīyo*

मम दृशिगोचर एष आविरात्मा॥४१॥ *mama dṛśigocara eṣa āvirātmā ।।41।।*

In the grand assembly of sages, royalty, and dignitaries who gathered at the time of Yudhiṣṭhira's *rajasuya yajña* , I witnessed how He who was the apple of all eyes received the highest honor and worship from all the people by unanimous consent. That same Lord, the self of all-being, is Himself standing before me at the time of my death. (41)

जिस समय युधिष्ठिरका राजसूय-यज्ञ हो रहा था, मुनियों और बड़े-बड़े राजाओंसे भरी हुई सभामें सबसे पहले सबकी ओरसे इन्हीं सबके दर्शनीय भगवान् श्रीकृष्णकी मेरी आँखोंके सामने पूजा हुई थी; वे ही सबके आत्मा प्रभु आज इस मृत्युके समय मेरे सामने खड़े हैं ॥ ४१ ॥

युधिष्ठिर	राजा युधिष्ठिरके	**एषां**	इन (श्रीकृष्ण) का
राजसूयः	राजसूय यज्ञमें	**अर्हणं**	(प्रथम) पूजन
मुनिगण	मुनियों (तथा)	**उपपेद**	सम्पन्न हुआ
नृपवर्य	श्रेष्ठ राजाओंसे	**एष**	यह वही
संकुले	भरी हुई	**आत्मा**	परमात्मा
सदसि	सभाके	**मम**	मेरो
अन्तः	भीतर	**दृशिगोचरः**	आँखोंके सामने
ईक्षणीयः	दर्शनीय	**आविः**	प्रगट हैं ॥४१॥

तमिममहमजं शरीरभाजां *tamimamahamajaṁ śarīrabhājāṁ*

हृदि हृदि धिष्ठितमात्मकल्पितानाम् । *hṛdi hṛdi dhiṣṭhitamātmakalpitānām ।*

प्रतिदृशमिव नैकधार्कमेकं *pratidṛśamiva naikadhārkamekaṁ*

समधिगतोऽस्मि विधूतभेदमोहः ॥४२॥ *samadhigato'smi vidhūtabhedamohaḥ ।।42।।*

Just as the one Sun appears in many ways as seen through different eyes, yet remaining only one, similarly the world brought to manifestation by the Lord appears to be in the form of different physical bodies and minds. In reality, the Lord alone is the truth of all of them. Being freed from ignorance, and the error and confusion born of that ignorance, I see myself as not separate from Him. (42)

जैसे एक ही सूर्य अनेक आँखोंसे अनेक रूपोंमें दीखते हैं, वैसे ही अजन्मा भगवान् श्रीकृष्ण अपने ही द्वारा रचित अनेक शरीरधारियोंके हृदयमें अनेक रूप-से जान पड़ते हैं; वास्तवमें तो वे एक और सबके हृदयमें विराजमान् हैं ही । उन्हीं इन भगवान् श्रीकृष्णको मैं भेद-भ्रमसे रहित होकर प्राप्त हो गया हूँ ॥ ४२ ॥

एकं	एक ही	तं	उन
अर्कं	सूर्यके	इमं	(सम्मुख खड़े) इन
प्रतिदृशं	प्रत्येककी दृष्टिमें (अधिदेवता रूपसे)	अजं	अजन्माको
न एकधा	पृथक-पृथक लगने	अहं	मैं
इव	के समान	भेद	भेदका
आत्म	अपने द्वारा ही	मोहः	भ्रम
कल्पितानां	कल्पित किये गये	विधूतः	छोड़कर
शरीरभाजां	सब शरीरधारियोंमें	सम	भली प्रकार
हृदि हृदि	प्रत्येक के हृदयमें	अधिगतः	प्राप्त होगया हूँ ॥४२॥
धिष्ठितं	(अन्तर्यामी रूपसे) अधिष्ठित (विराजमान)		